किशोर आक्रमकता एवं समायोजन : एक अध्ययन

द्वारा

डॉ. कनिका खरे (सहायक प्रोफेसर)
चि. के. सी. बजाज कालेज आफ एज्युकशन नागपूर

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध शीर्षक "किशोर अवस्था में आक्रमकता, परिवार एवविद्यालय की भमिका–एक अध्ययन" है। इस संशोधन का चुनाव वर्तमान समय की ज्वलंत समस्या किशोरो म बढ़ती हुई आक्रमक प्रवृत्ती को ध्यान मरखते हुये किया गया है। किशोर आक्रमकता की समस्या आज प्रत्येक अभिभावक, अध्यापक तथा समाज सुधारक के यि सिरदद बन गई है। समाचार पत्र, दूरदर्शन में प्रतिदिन कोई – न – कोई समाचार किशोर आक्रमकता से संबंधित होता है। किशोर आक्रमकता सभी देशा की बढ़ती हुई ज्वलंत समस्या है किशोरो की इस आक्रमक प्रवृत्ती का रोका जाना अत्यंत आवश्यक है। अतः प्रस्तुत शोध काय का मुख्य उद्देश्य "किशोरा की आक्रमक प्रवृत्ति को समझना एवं इस आक्रमकता को समझने हेतु आक्रमक किशोरो के पारिवारिक व विद्यालय की भूमिका का अध्ययन करना है। इस अध्ययन हेतु सर्व प्रथम आक्रमक किशोरो की पहचान की गई एवम् उनक समायोजन, बुद्धिमत्ता, सामाजिक आर्थिक स्थिती व अभिभावको के प्रोत्साहन का अध्ययन विभिन्न परिक्षा द्वारा किया गया है। तथा उनका सामान्य किशोरो स तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।"

समाज, बालक तथा शिक्षा का संबंध

शिक्षा के इतिहास में एक समय था जब बच्च की बुद्धि, रूचि व मानसिक स्थिती की ओर कोई ध्यान नही दिया जाता था। शिक्षा पूर्णतया अध्यापक केंद्रित थी, और शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बच्चो को "थ्री आर्स" का ज्ञान देना था, किन्त अब शिक्षा का केंद्र बालक बन गया है, उसकी मानसिक स्थिती रूचि व अन्य योग्यताओ का आधार मानकर ही पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है, और शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगिण विकास करना है।

यदि बालक मानसिक दृष्टि से स्वस्थ नहीं होगे तो उनकी रूचि पढ़ाई मउनका ध्यान केंद्रित नहीं हो सकता है, और शिक्षण का लाभ नहीं उठा सकेंगे। प्रत्येक अध्यापकको मानसिक स्वास्थ्य व विज्ञान का ज्ञान होना आवश्यक है, जिससे वह अपने और छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को बनाये रखने में सहयोग द सके और जो छात्र मानसिक रोगो से या समायोजन दोनो से पीडित हो, उनकी सहायता कर सके। यह बात सर्वविदित है, कि मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान और शिक्षा, दोनो को एक दूसरे से भिन्न नहीं किया जा सकता। प्रजातंत्र देश में – (1) आत्मानुभूती (2) मानव संबंध (3) आर्थिक कुशलता (4) नागरिक उत्तरदायित्व उद्देश्यों की प्राप्ति तब ही हो सकती है, जब बालक मानसिक दृष्टि से स्वस्थ्य हो।

शिक्षा का उद्देश्य छात्रो के मानसिक स्वास्थ्य को ठीक बनाय रखना भी है। क्योंकि अच्छे मानसिक स्वास्थ्य के बगैर बच्चो की योग्यताओ का उचित विकास संभव नही है, और जिन बच्चो म भय, चिन्ता, निराशा तथा

अन्य समायोजन संबंधी दोष का विकास हो जाता है, उनका मन पढने में नहीं लगता और दोषों में उन्नती नही हो पाती।

किशोरावस्था

किशोरावस्था, मानव जीवन के विकास की सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण अवस्था है। इ. ए. किलपैट्रिक के अनुसार यह जीवन का सबसे कठिन काल है। यह समय बाल्यावस्था तथा प्रौढ़ावस्था के बीच का सन्धिकाल होता है जिसमें बालक न तो बालक ही रह जाता है और न प्रौढ़ ही बन पाता है। इस अवस्था में शारीरिक परिवर्तन इतने अधिक और तीव्र गति से होते है जिससे उसमें दुर्गुण उत्पन्न होने की संभावना हो जाती है। उसमे क्रोध, घृणा, चिड़चिड़ापन, उदासिनता आदि का अभ्युदय हो जाता है, अपराधी प्रवृत्ति अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच जाती है और वह नशीली वस्तुए प्रयोग करने लगता है। वह यह भी चाहने लगता है कि सबके समान उसे भी महत्त्व दिया जाय और उसका भी आदर हो। अतः माता–पिता, अभिभावक, शिक्षक तथा अन्य सम्बन्धित व्यक्तियो को अत्याधिक सतर्क रहना चाहियऔर उसके स्वस्थ विकास के लिए गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। इस अवस्था के महत्त्व को दर्शाते हुए क्रो एवम् क्रो ने अपने विचार व्यक्त किये है, "किशोर ही वर्तमान की शक्ति और भावी आशा को प्रस्तुत करता है।"

शैक्षिक दृष्टि से, किशोरावस्था के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए इंग्लैंड की हैडो कमेटी ने अपने प्रतिवेदन में लिखा है, "ग्यारह या बारह वर्ष की आयु में बालक की नसों में ज्वार उठना आरम्भ हो जाता है, इस किशोरावस्था

के नाम से पुकारा जाता है। यदि इस ज्वार का बाढ के समय ही उपयोग कर लिया जाय एव इसकी शक्ति और धारा के साथ–साथ नई यात्रा आरम्भ कर दी जाय तो सफलता प्राप्त की जा सकती है।" अतः उपरोक्त विचारासे स्पष्ट है कि माता–पिता अभिभावको तथा शिक्षकों का किशोरा की प्रमुख विशेषताआं आवश्यकताओं रूचियो तथा विकास की सम्भावित शक्तियो का पू ा ज्ञान होना आवश्यक है जिससे वे उनके विकास में समुचित योगदान दे सके।

किशोरावस्था का अर्थ

अंग्रेजी भाषा में, किशोर का अनुरूप शब्द एडोलेसेन्स है। शब्द एडोलेसेन्स की व्युत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द एडोलेसियर से हुई है जिसका अर्थ होता है– 'परिपक्वता की ओर बढ़ना अतः शाब्दिक अर्थ में किशोरावस्था मानवजीवन के विकास की वह अवस्था है जिसके माध्यम से बालक परिपक्वावस्था या प्रौढ़ावस्था की ओर बढ़ता है। किशोरावस्था के अर्थ कास्पष्ट करन के लिए कुछ प्रमुख वैज्ञानिको ने इसे निम्न प्रकार परिभाषित किया है–"किशोरावस्था, प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में वह काल है, जाबाल्यावस्था क अन्त में आरम्भ होता है और प्रौढ़ावस्था के आरम्भ में समाप्त होता है।" किशोरावस्था वह समय है जिसमें विकासशील व्यक्ति बाल्यावस्था से परिपक्वता की ओर संक्रम ा करता है। यह अवस्था, सामान्यतः 12 वर्ष की आयु स 18 वर्ष की आयु तक मानी जाती है। विभिन्न देशो में व्यक्तिगत भिन्नता, संस्कृति, जलवायु आदि के कार ा इस अवस्था की अवधि में कुछ भिन्नता पाई जाती है। शीत प्रधान देशो की अपेक्षा गर्म देशो में किशोरावस्था

कुछ पहले आरम्भ हा जाती है। बालको की अपेक्षा बालिकाए लगभग दो वर्ष पहले किशोरावस्था में प्रवेश कर जाती है।

कुछ मनोवैज्ञानिको के अनुसार किशोरावस्था को दो भागो में विभाजित किया जा सकता है-

(क) पूर्व–किशोरावस्था – 12 से 16 वष

(ख) उत्तर–किशोरावस्था – 17 से 19 वष

किशोर आक्रमकता का अर्थ

आक्रमकता से तात्पर्य है, जिसमें बालक अपनी आवश्यकताओ की पूतीमें बाधा पहुँचानेवाल या असंतोष उत्पन्न करनेवाल व्यक्ति या वस्तु को चोट या हानि पहुँचाकर अपने मानसिक तनाव को कम करना चाहता है।आक्रमकता प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष एवं अन्तर्निदेशित प्रकार की हा सकती है।

किशोर आक्रमकता के प्रकार

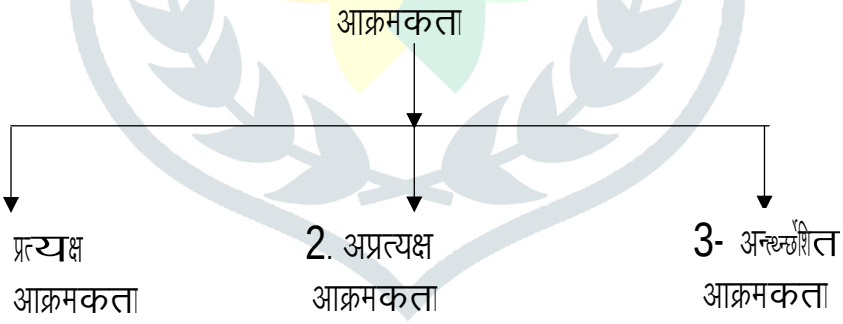

प्रत्यक्ष आक्रमकता

इस प्रकार की आक्रमकता में बालक उसी व्यक्ति या वस्तु पर आक्रम । करता है उसके असंतोष का कार । होता है।

उदा– एक परीक्षार्थी नकल करना चाह रहा है, किन्तु कक्षनिरीक्षक उसे नकल करने से मना कर रहा है, अर्थात उसकी लक्ष्यपूर्ती में कक्षनिरीक्षक बाधा बन रहा है, तो बालक कक्षनिरीक्षक पर ही आक्रम ा करता है, यहाँ पर नकल करने ु क उद्देश्य की पूर्ती ना होने पर उसमे आक्रमकता की प्रवृत्ती उत्पन्न हुई।

अप्रत्यक्ष आक्रमकता

इसमें व्यक्ति असंतोष उत्पन्न करनेवाले व्यक्ति या वस्तु पर आक्रम ा ना कर के किसी दूसरे व्यक्ति या वस्तु पर आक्रम ा करता है। इसआक्रमकता प्रतिस्थापन भी कहते है।

उदा – परीक्षार्थी कक्षनिरीक्षक पर आक्रम ा ना कर क बाहर आकर अपने दोस्त या छोटे भाई–बहन से लड–झगड कर अपना तनाव दूर कर लेते है।

अंतर्निदेशित आक्रमकता

कभी कभी बालक किसी कार ावश अपन को ही दंडित कर लेता है। इसे अन्तर्निदेशित आक्रमकता कहते है। इस प्रकार की आक्रमकता स्त्रिया, बच्चो एवं निर्बल लोगो में अधिक दिखाई पडती है।

समाज का वातावरण एवं किशोर आक्रमकता

किशोरो पर समाज के वातावर ा क्का प्रभाव पड़ता है। घर और विद्यालय के बाद उसका अधिक समय समाज म ही व्यतीत होता है। समाज में विद्यमान ये तथ्य उसे आक्रमकता की ओर प्रवृत्त करते है।

- दोहरा स्तर – जब घर तथा विद्यालय म आचार और व्यवहार मअन्तर दिखाई देता है तो किशोर परेशान हा जाता है। घर और विद्यालय दोनो ही स्थानो पर उसे सच बोलना, चोरी न करना, सदा सहायता तथा सेवा करना आदि के पाठ पढ़ाये जाते हैं परंतु समाज में वह उसके सर्वथा विपरीत पाता है।
- पक्षपात – समाज में पक्षपातप ाण व्यवहार तथा भेदभावप ा नीति किशोरो पर गलत प्रभाव डालती है। वे भी पक्षपात की भावना से भर जाते है और आक्रमक हा जाते है। किशोरो के अपराधी हाने पर अन्तर्राष्ट्रीय वातावर ा का भी अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।
- व्यक्तिगत शिक्ष ा – केन्द्र बड़े-बड़े शहरा में व्यक्तिगत शिक्षा केन्द्र किशोर को आक्रमक बनान में एक बहुत बड़ कार ा है। ये केन्द्र दफ्तर के क्लको या दूसरे व्यवसाय वाला द्वारा चलाये जाते हैं और इसक माध्यम से किशोरो को घर स बाहर जाने का एक बहाना मिल जाता है, जिसका व गलत लाभ उठाते है। कइ बार य कोचिंग सेन्टर ग डा गर्दी के केन्द्र बन जाते है। और किशोरो की अपराधी प्रवृत्तियाकी ओर प्रेरित करते है।
- राजनीति में घसीटना – अधिकांश राजनीतिक पार्टियाँ किशोरा को चुनाव में घसीटने का प्रयत्न करती है। उनको विभिन्न प्रकार कराजनीति काय में भाग लने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है। बड़े बड़े विद्यालय म किशोरो पार्टी बनाकर छात्र –संघ का चुनाव लड़तहैं और इस प्रकार दला में विभक्त हा जाते है। एक दूसरे को नीचा

दिखाने का प्रयत्न करते हैं। किशोरो में आपस में लड़ाई झगड़ा को इससे जन्म मिलता ह जो मुकदमा का कार ा भी बनती है।

उद्देश्य

- विद्यालय परिवेश में आक्रमक किशोरो की पहचान करना।
- आक्रमक किशोर व सामान्य किशोरो में समायोजन का अध्ययन करना।

परिकल्पना

- आक्रमक किशोर व सामान्य किशोरो के समायोजन में कोई अंतर नहीहोगा।

अनुसंधान कार्य पद्धति

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु, शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया है। इसक लिए सर्वप्रथम नागपुर शहर क नामी विद्यालयों में से 5 विद्यालय का चुनाव किया गया है। स्कूलो का चुनाव करन के पश्चात उन स्कूला मसामान्य किशोर व आक्रमक किशोरो की पहचान करने के लिये "डा प्रीती तिवारी" द्वारा निर्मित "आक्रमक सार ी" मापनी का उपयोग किया गया है।

आक्रमक किशोरो व सामान्य किशोरो के समायोजन का अध्ययन करनके लिये "श्रीमती आर. दुबे" द्वारा निर्मित "किशोरा की समायोजन मापनी" का उपयोग किया गया है। इस मापनी की सहायता से आक्रमक किशोरो व सामान्य किशोरा क समायोजन का अध्ययन किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत संशोधन के लिये नागपुर शहर के नामी स्कूलों से 5 विद्यालयोंका चयन किया गया है। इन विद्यालयां में कुल मिलाकर 2292 किशोरो का चुनाव किया गया है, जिनमें से आक्रमक किशोरो की संख्या 1057 हैं।

- किशोरों की वार्षिक अंकसूची
- स्वनिर्मित प्रश्नावली

आक्रमक मापन सारणी

"डा. प्रिति तिवारी" द्वारा निर्मित आक्रमक मापन सारणी का परीक्षण आक्रमक किशोरो के चयन क लिये किया गया। इसक अंतर्गत 11 से 19 वर्ष के किशोरो का समावेश किया गया है। इस सारणी के माध्यम से किशोराकी आक्रमक प्रवृत्ति का परीक्षण किया गया है।

इस परीक्षण में कुल 40 प्रश्नो का समावेश है। प्रत्येक प्रश्न क सामने तीन विकल्प दिये गये है, जैसे की "सदैव", "कभी–कभी", और "कभी नही"। इस मापनी में दो प्रकार के प्रश्नो का समावेश किया गया है। सकारात्मक प्रश्न, नकारात्मक प्रश्न।

सकारात्मक प्रश्न : सदैव क लिए 2 अंक, सकारात्मक प्रश्न म कभी–कभी के लिये 1 अंक और कभी नही के लिये 0 अंक दिया गया है।

नकारात्मक प्रश्न : सदैव के लिए 0 अंक, सकारात्मक प्रश्नो में कभी–कभी के लिये 1 अंक और कभी नही के लिये 2 अंक दिया गया है।

किशोर समायोजन मापनी

"श्रीमती रागिनी दुबे द्वारा निर्मित किशोर समायोजन मापनी परीक्षण की सहायता से किशोरो के चयन के लिये किया गया। किशोर 'समायोजन मापनी' परीक्षण प्राथमिक व माध्यमिक शालाओ के किशोरो के लिये है। इस परीक्षण में कुल 80 प्रश्नो का समावेश किया है। जिसमे से कुछ प्रश्न स्वसमायोजन के लिए, कुछ प्रश्न समवय समूह समायोजन के लिए व कुछ प्रश्न विद्यालयीन समायोजन के लिए दिये गये है। प्रत्येक कथन के सामने दो विकल्प 'हाँ और 'नहीं' है। इस मापनी में दो प्रकार के प्रश्नो का समावेश किया गया है। सकारात्मक प्रश्न, नकारात्मक प्रश्न।

सकारात्मक प्रश्न : इसमे 'हाँ' के लिए 1 अंक व 'नही' के लिए 0 अंक दिया है।

नकारात्मक प्रश्न : इसमे 'हाँ' के लिए 0 अंक व 'नही' के लिए 1 अंक दिया है।

आक्रमक किशोरों व किशोरियों आक्रमक किशोर एवं किशोरियों का समायोजन एवं सामान्य किशोर एवं किशोरियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

समूह	छ	डमंद	ᵟ	ु
आक्रमक किशोर एव किशोरियाँ	1057	32.09	16.2	30.9
सामान्य किशोर एवं किशोरियाँ	1235	51.93	14.1	

आक्रमक किशोर एव किशोरियो तथा सामान्य किशोर एव किशोरियाके व्यवहार के कारणो की पहचान विभिन्न परिक्षणो के माध्यमो से की गई।

है। आक्रमक किशोर एवं किशोरियो तथा सामान्य किशोर एव किशोरियो का समायोजन करने की क्षमता का अध्ययन करने के लिये "रागिनी दुबे" द्वारा रचित "किशोर समायोजन मापनी" का उपयोग किया गया है। जिसके अनुसार आक्रम । किशोर एव किशोरियो का मध्यमान 32.09 तथा प्रमा । विचलन 16.2 निकाला गया है। तथा सामान्य किशोर एव किशोरियो का मध्यमान 1235 तथा प्रमा । विचलन 14.1 निकाला गया है।इसका आधार पर टी का मूल्य 30.9 निकाला गया है।सार ी तालिका मे टी का मान 0.01 स्तर पर 2.58 तथा 0.05 स्तर में 1.96 है। प्राप्त टी का मान 0.01 स्तर तथा 0.05 स्तर से अधिक आया है, इसलिये हम शून्य परिकल्पना का त्याग करना पडेगा।

अर्थात् इसका अर्थ यह है, कि मध्यमानो में सार्थक अंतर आया है। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है, कि सामान्य छात्रों मे समायोजन करने की क्षमता अधिक है, तथा आक्रमक छात्रों में समायोजन करन की क्षमता का अभाव पाया गया है।

निष्कर्ष

आक्रमक किशोर व आक्रमक किशोरियो के समायोजन के स्तर का मापन "समायोजन मापनी" द्वारा किया गया है। जिसके अनुसार 12.84: आक्रमक किशोरो का स्तर बहुत अच्छा, 5.08: आक्रमक किशोरो का स्तर अच्छा, 32.82: आक्रमक किशोरो का स्तर सामान्य, 38.04: आक्रमक

किशोरो का स्तर निम्न तथा 11.19: आक्रमक किशोर अति निम्न स्तर कहै।

सामान्य किशोरो के समायोजन मापन के पश्चात् यह देशा गया है, कि 8.85: किशोर बहुत अच्छे स्तर के, 9.59: किशोरा का स्तर अच्छा, 19.18: किशोरे का स्तर सामान्य, 31.73: किशोरो का स्तर निम्न तथा 30.60: किशोरे का स्तर अति निम्न है।

आक्रमक किशोर व आक्रमक किशोरियो के समायोजन का मध्यमान क्रमशः 32.04 एव 32.15 आया है, इससे यह निष्कर्ष निकलता है, कि आक्रमक किशोर व आक्रमक किशोरियो के समायोजन करन की क्षमता मे कोई अंतर नहीं है, तथा आक्रमक किशर व किशरिया मे समायजन करनकी क्षमता समान है।

संदर्भ सूची

☐ झींजजंतपए`ण ।एए ;1982द्ध ष्ब्वउचंतपेवद वf ठमींअपवतंस `जतंजमहपमे वित तमकनबपदह मगंउपदंजपवद ´दगपमजल पद हपतसेए चीण क्ण् चेलए झीप टपकलंचपजीए ँद्धक`नतअमल वf त्मेमंतबी पद म्कनबंजपवदए 1978.83ण

☐ झपतंदए न्एए ;1983द्ध ष्।दगपमजलए जेंए ब्वउचसमगपजल ´दक `मग ´ तमसंजमक जव टमतइंससल म्गचतमेमक च्तममितमदबम ´दक च्तवइसमउ.वसअपदह च्मतवितउंदबमष् चीण क्ण् चेलए ।हतं न्दपण्ए प्टजी`नतअमल वf त्मेमंतबी पद म्कनबंजपवदए टवसण 1983.88ण

☐ झवनसए स्एए ;1986द्ध ष्। `जनकल वf जीम मffमबज वf डेंजमतल स्मंतदपदह `जतंजमहपमे वद ।बीपमअमउमदज डवजपअंजपवद ´दक ज्मेज ।दगपमजल वf`वबपंससल क्पेंकअंदजंहमक ळतवनच पद भ्पउंबींस च्तंकमीए ष्क्मचजण वf म्कनबंजपवदए भ्च्न्ए प्टजी`नतअमल वf त्मेमंतबी पद म्कनबंजपवदए टवसण प्प् 1983.88ण

- संपतकए त्ण क्ण ;1999द्ध रू ठमेज तिपमदकीपचेए हतवनच तमसंजपवदीपचे ंदक ंदजपेवबपंस इमींअपवत पद मंतसल ंकवसमेबमदबमष श्रवनतदंस वि ंक्तसल ।कवसमेबमदबमए 19ए 413.437ण

- स्पपें ज्ञमसजपांदहें.श्रंतअपदमद ;2003द्धरू ।हहतमेपअम च्तवइसमउ दृ ैवसअपदह ैजतंजमहपमेए ।हहतमेपअम ठमींअपवतए ंदक ैवबपंस ।बबमचजंदबम पद म्ंतसल ंदक स्ंजम ।कवसमेबमदबमण श्रवनतदंस वि ल्वनजी ंदक ।कवसमेबमदबम टवसनउमरू 31 प्ेेनमरू 4 कंजमकरू ।नहनेज 2002 च्ंहमे रू 279 जव 287ण

- स्वबीउंदए भ्ंतदर्पी ;1997द्ध रू त्मंबजपअम ंदक चतवंबजपअम ंहहतमेपवद पद ेबीववस बीपसकतमद ंदक चेलबीपंजतपबंससल पउचंपतमक बीतवदपबंससल ेनसजपअम लवनजीण्ष श्रवनतदंस वि ।इदवतउंस च्लबीवसवहलए 106ए 37.51ण

- स्लकपं व्श क्वददमससए म्कण् व ;2008द्ध रू ।हहतमेपअम इमींअपवते पद मंतसल ंकवसमेबमदबम ंदक ेनइेमुनमदज ेनपबपकंसपजल ंउवदह नतइंद लवनजीए न्दपअमतेपजल वि ब्वसवतंकवण

- डंसपाए त्ण ज्ञण्ए ;1978द्ध ए रू ष् ।ैजनकल वि ैमसि.क्पेबसवेनतमए ैमसि ।बबमचजंदबम ंदक ।दगपमजल ंउवदह बवससमहम ेजनकमदजेष् चीण क्ण् च्लण्ए ।हतं न्दपण्ए प्टजी ैनतअमल वि त्मेमंतबी पद म्कनबंजपवदए टवसण प्प्ए 1983. 88ण

- डंजीनतए क्ण्ए ;1982द्ध ष्।ेजनकल वि त्वतेबींबी क्पंहदवेजपब प्दकपबंजवते वि प्दजमससपहमदबमए ।दगपमजलए ैमसि प्उंहम ंदक समअमस वि ।चपतंजपवदष् क्ण् चीपसण्ए च्लए ।ससण् न्दपण् प्टजी ैनतअमल वि त्मेमंतबी पद म्कनबंजपवदए टवसण् प्ए 1983.88ण

- डबमससपेमउ श्रवेमची म्ण ;1991द्ध रू ।िमिबजपअम ंदक चतमकंजवतल अपवसमदबम रू । इपउवकंस बसेंपपिबंजपवद ेलेजमउ वि ैनउंद ंहहतमेपवद ंदक अपवसमदबमण न्दपअमतेपजल वि डवदजतमंसए ब्ंदंकं

- डबथ्ंकलमद दृ ज्ञमजबीनउ ;1996द्ध रू च्ंजमतदे वि बींदहम पद मंतसल बीपसक ंहहतमेपअम दृ कपेतनचजपअम इमींअपवत रू ळमदकमत कपीमितमदबमे पद चतमकपबजवते तिवउ मंतसल बवमतबपअम ंदक ंिमिबजपवदंजम उवजीमत दृ बीपसक पदजमतंबजपवदेष बेपसक क्मअमसवचउमदजए 67ए 2417.2433ण

- डबथ्ंलकमद दृ झमजबीनउए`ैण ।णए ;1998द्ध रू च्ममत हतवनच अपबजपउप्रंजपवद`ं चतमकपबजवत वि बीपसकतमदश्े इमींअपवत चतवइसमउे ंज ीवउम ंदक पद `बीववसष् क्मअमसवचउमदज ंदक च्ेलबीवचंजीवसवहलए 10ए 87.99ण

- डमीतवजतंए`ैणए ;1986द्ध ष्।`जनकल वि जीम तमसंजपवदेीपच इमजूममद प्दजमससपहमदबमए`वबपव. मबवदवउपब `जंजनेए ।दगपमजलए च्मतेवदंसपजलए ।करनेजउमदज ंदक ।बंकमउपब ।बीपमअमउमदज वि भ्पही`बीववस`जनकमदजेष्ए चीण क्ण् म्कनणए झंदण् न्दपणए प्टजी`नतअमल वित्मेमंतबी पद म्कनबंजपवदए टवसण् एए 1983.88ण